कुल पृष्ठ संख्या– 20 (कवर पेज सहित) क्रम संख्या 2338502

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

माध्यमिक परीक्षा

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी (परीक्षक के उपयोग हेतु)			
प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1	12	19	3
2	6	20	6
3	6	21	4
4	6	22	3½
5	3	23	
6	3	24	
7	2	25	
8	2	26	
9	2	27	
10	2	28	
11	2	29	
12	2	30	
13	2	31	
14	2	योग	79½
15	2	प्राप्तांकों का कुल योग (Round off)	
16	3	अंकों में	शब्दों में
17	3	80	अस्सी
18	3		

परीक्षक के हस्ताक्षर ____________

संकेतांक 4 5 6 4 0

(प

नो ... भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी ☐ अंग्रेजी ☑

विषय हिन्दी Hindi

परीक्षा का दिन Thursday

दिनांक 19-02-26

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालन अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य है, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3)कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदाहरणार्थ: 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 60 जी.एस.एम. ईको मैपलिथो कागज़ ही उपयोग में लिया गया है। 181 / 2026

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका, उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशंसा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर ही अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी:–

   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।

   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिए। परीक्षार्थी उत्तर पुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।

   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केल्क्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रॉनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध है।

   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिख कर लावें। टेबल के आस–पास कोई अनुचित सामग्री नहीं होनी चाहिए, इसकी जांच कर लें।

   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।

5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित हैं। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
		खण्ड - अ
12	1	
1	(i)	[ब] अव्यय
1	(ii)	[अ] सम
1	(iii)	[द] भानपुरा
1	(iv)	[अ] खीरे
1	(v)	[स] संगमरमर की
1	(vi)	[अ] कृष्ण को
1	(vii)	[द] जब उसके साथ नजरों का बांकपन जुड जाता है
1	(viii)	[अ] चट्टान जैसा भारी
1	(ix)	[स] मछलियो को खिलाने
1	(x)	[द] पीसी हुई हल्दी
1	(xi)	[अ] सिक्किम
1	(xii)	[स] भारत लौटकर

BSER-181/2026

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
1+1+1+1+1+1 = 6	2	
1	(i)	घः (द)
1	(ii)	गुण (गण + ईश)
1	(iii)	विशेषण
1	(iv)	प्रत्यय
1	(v)	तीन
1	(vi)	क्रिया
1+1+1+1+1+1 = 6	3.	
1	(i)	ब) मधुर वाणी
1	(ii)	अ) कठिनाइयों का
1	(iii)	अ) सकारात्मक
1	(iv)	उचित शीर्षक – 'मधुर वाणी का प्रभाव'
1	(v)	मीठी वाणी से सम्बन्धों में घनिष्ठता आती है।
1	(vi)	व्यक्ति के व्यवहार की पहचान उसकी वाणी से होती है।

BSER-181/2026

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
1+1+1+1+1+1 = 6	4 (i)	स) मातृभूमि को
1	(ii)	अ) नीलाम्बर
1	(iii)	द) प्रेम की
1	(iv)	उचित शीर्षक – 'मातृभूमि की सुंदरता' ।
1	(v)	कवि ने सूर्य-चन्द्र और मेखला रत्नाकर को युग-मुकुट कहा है।
1	(vi)	इस इस सुन्दर वेश का अभिषेक पयोद अर्थात बादल करते हैं।
1+1+1 = 3	5 (i)	अरब देश में फूँककर बजाए जाने वाले वाद्य जिनमें नाड़ी (नरकट या रीड) होती है, उन्हे नय बोलते हैं।
1	(ii)	शहनाई को 'शाहेनय' अर्थात 'सुषिर वाद्यो में शाह' की उपाधि दी गई है।
1	(iii)	तानसेन के द्वारा रची बंदिश में शहनाई, मुरली, वंशी, एवं श्रृंगी एवं मोरचंग आदि का वर्णन आया है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
1+1+1 ③ 1	6. (i)	शिवधनुष भगवान श्री राम ने तोड़ा।
1	(ii)	धनुष तोड़ने वाले वाले को परशुराम द्वारा सहसबाहु के समान शत्रु बताया गया है।
1	(iii)	पहली बार धनुष को खंडित अर्थात टूटा हुआ देखकर परशुराम को क्रोध आया। दूसरी बार जब लक्ष्मण ने परशुराम जी का अपमान करते हुए कहा कि इस धनुष पर ही आपकी ममता क्यों है, तब परशुराम को क्रोध आया।

खण्ड-ब

②	7.	'एक कहानी यह भी' पाठ 'मन्नू भण्डारी जी' की रचना है। इसमें लेखिका के अनुसार यश कामना बल्कि यश लिप्सा पिताजी की सबसे बड़ी दुर्बलता थी। यश कामना की के के कारण ही वह अहंवादी और शक्की स्वभाव के हो गए थे। आर्थिक झटके के कारण वे मध्य प्रदेश से अजमेर, राजस्थान में आ गए थे। यहाँ पर आकर उन्होंने अँग्रेजी-हिन्दी शब्दकोश की रचना की।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
2	8.	जीवन के आरंभिक दिनों में अमीरुद्दीन अर्थात उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ की संगीत के प्रति आसक्ति रसूलन बाई और बतूलन बाई के कारण हुई। जब भी वह बालाजी मंदिर को जाते तब उन्हे अनेक प्रकार के ठुमरे, टुप्पी आदि सुनने को मिलते थे। साथ ही अमीरुद्दीन के नाना जी, कुलसुम हलवाई एवं फिल्म अभिनेत्री सुलोचना ने भी उनकी संगीत आसक्ति के प्रति आसक्ति प्रकट हुई है। इसके अलावा संगीत के प्रति उनके अनुराग ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
2	9.	संस्कृति पाठ के आधार पर आग के आविष्कार में प्रकाश, जंगली जानवरो से बचने का उपाय एवं भोजन पकाया जाना प्रेरणा स्रोत रहे हैं। आदिमानव ने रात के अंधेरे में प्रकाश की कल्पना की होगी। जंगली जानवरो से लड़ने व उन्हे उजाला दिखाकर भगाना भी एक कारण रहा होगा, साथ ही कच्चा भोजन अमाशय में पचने में अधिक समय लेता है। अतः उसे पकाया जाना एक प्रेरणा स्रोत रहा होगा।
2	10.	'उत्साह' कविता में सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' द्वारा रचित है। इसमे कवि ने बादल को निम्नलिखित दो रूपों में चित्रित किया है :- (i) पीड़ित-प्यासे जन की आकांक्षा को तृप्त करने वाले कोमल बादल।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
		(ii) नई चेतना और नई कल्पना अकुरति अंकुरित करने के लिए विध्वंस, विप्लव लाने वाले क्रान्तिकारी बादल।
		इसके साथ ही बादल को काले-काले एवं घुँघराले भी बताया गया है।
2	11.	'अट नही रही है' कविता निराला द्वारा रचित है। कविता में कवि ने फागुन की सुंदरता को अनेक रुपों में देखा है। प्रकृति अत्यंत सुंदर लग रही है। चारो ओर हरियाली ही हरियाली है और इस पर सुनहरे रंग की सूरज की किरणे गिर रही है। साथ ही पक्षी आकाश में उड़ने को पर-पर कर रहे है। चारो ओर मंद-मंद वायु का प्रवहन है। अतः कवि ने फागुन की सुंदरता का वर्णन इन रुपों में किया है।
2	12.	'संगतकार' कविता मंगलेश डबराल द्वारा रचित है। कवि ने कविता में संगतकारो की भूमिका का महत्व बताया है। संगतकार वे लोग होते है जो मुख्य गायक के स्वर में स्वर मिलाकर उसे बल प्रदान करते है। जब कभी मुख्य कलाकार की आवाज बैठने लगती है, तब वे स्वयं गायन चालू करके उसे बदनामी से बचाते है। कविता में साथियों की भूमिका का महत्व दर्शाया गया है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
2	13	'साना-साना हाथ जोड़ि' पाठ मधु कांकरिया जी की रचना है। पाठ के अनुसार गैंगटॉक का असली नाम 'गंतोक' है जिसका अर्थ होता है 'पहाड़'। गंतोक एक पहाड़ी क्षेत्र है जो काफी ऊँचाई पर स्थित है। यह भ्रमण करने के लिए टूरिस्ट के हृदय में एक अलग ही स्थान प्राप्त करता है। गैंगटॉक को मेहनतकश बादशाहों का शहर भी कहते हैं। गैंगटॉक का नाम - गंतोक अर्थ - पहाड़
2	14.	भोलानाथ और उसके साथी तरह-तरह के खेल खेलते थे। कभी वे बारात का जुलूस निकालते थे जिसमे समधी बनकर बकरे पर चढ़ लेते थे। तो कभी भोजन बनाकर पंगत में बैठकर खाने का अभिनय करने वाले खेल खेलते। कभी दुकान लगाकर सामान बेचते तो कभी फसल उगाने लग जाते। फसल के पक जाने पर उसे नापते-तौलते। फिर पिताजी के आने पर उसे पैरों से रौंद डालते। इस तरह वे अनेक ग्रामीण खेल-खेलते थे।
2	15.	अर्थ - कपटपूर्ण व्यवहार करना वाक्य प्रयोग - मैंने राम को मेरा सच्चा मित्र माना, परंतु वह तो आस्तीन का साँप निकला।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

खण्ड- 'स'

3

16. 'बालगोबिन भगत' पाठ रामवृक्ष बेनीपुरी जी द्वारा रचित है। बालगोबिन भगत एक गृहस्थ साधु थे। उनके एकमात्र और विशेष-प्रिय बेटे की मृत्यु हो जाने के बाद भगत की देखभाल करने, भोजन पकाने और बीमार होने की स्थिति में सेवा करने वाला पुत्रवधू के अतिरिक्त और कोई नही था। यदि वह भी उन्हे छोड़कर चली जाती तो भगत नितांत अकेले रह जाते और ऐसे में उनका जीवन और भी कष्टमय हो जाता। है अतः पुत्रवधू ने अपने धर्म का पालन करते हुए भगत से प्रार्थना की कि उन्हे भाई के साथ न भेजे बल्कि यही रहने दे। फिर भी भगत ने उसके भाई को बुलाया और कहा- "इसकी दूसरी शादी करवा देना"। पुत्रवधू के पुनः मना करने पर भगत ने उन्हे कहा- कि "तू जा नही तो मैं स्वयं ही यह घर छोड़कर चला जाऊँगा"। भगत की इस जिद के आगे बेबस होकर उसे अंत में घर छोड़कर जाना ही पड़ा।

3

17. उद्धव एक बहुत बड़े योगी है, ज्ञानी है परंतु वह प्रेम की मार्मिक अनुभूति से वंचित है। गोपियाँ श्री कृष्ण से बहुत प्रेम करती थी। परंतु कृष्ण उन्हे छोड़कर मथुरा चले गए।

BSER-181/2026

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

गोपियाँ श्री कृष्ण के वियोग में व्यथित रहती थी । श्री कृष्ण के आने की आशा ही उनके जीवन जीवन का आधार थी और उसी आधार पर उन्हें उन्होंने अपनी शरीर एवं मन पर अनेक प्रकार की पीडाओं को सहन किया । उन्हें आशा थी कि यदि श्री कृष्ण स्वयं न आए तो वे प्रेम-रस भरा संदेश भिजवाएँगे । लेकिन श्री कृष्ण ने उद्धव के माध्यम से प्रेम-रस के बजाय योग-साधना का संदेश भिजवाया जिसने उनकी विरहाग्नि को भडकाने का कार्य किया । उन्हें यह योग-साधना का संदेश एक ऐसी बीमारी के समान प्रतीत हुआ जिसे उन्होंने न कभी देखा, न कभी सुना और न ही उसका कभी भोग किया हो । श्री कृष्ण ने मथुरा वापस लौटने के वचन को तोडा साथ ही योग संदेश भिजवाकर उनकी विरहाग्नि को भडकाया । अतः गोपियों ने योग-साधना को कड़वी ककडी के समान बताया ।

3 18. 'मैं क्यों लिखता हूँ' पाठ 'अज्ञेय जी' की रचना है । लेखक के अनुसार लेखन में अनुभूति अधिक मदद करती है ।

अनुभव तो प्रत्यक्ष का होता है परन्तु जो आँखो के सामने घटित हुआ हो परंतु अनुभूति कल्पना और संवेदना के सहारे सत्य को आत्मसात कर लेती है जो आँखो के सामने ज्वलंत प्रकाश बन जाता है । अतः लेखन में अनुभव की अपेक्षा अनुभूति अधिक मदद करती है ।

BSER-181/2026

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

उदाहरण के लिए देखा जाए तो लेखक ने अखबार में हिरोशिमा के बारे में पढ़ा, वहाँ जाकर अस्पताल में लोगो से मिला। इससे उसे केवल अनुभव हुआ और उसका मन लिखने के लिए नही माना परंतु जब उसने पत्थर पर पड़ी छाया देखी फिर कल्पना की कि रेडियो-धर्मी किरणो ने वहाँ पर खड़े किसी व्यक्ति को भाप बनकर उड़ा दिया होगा। तब लेखक को विस्फोट की अनुभूति हुई और वह लिखने को प्रेरित हुआ। इस आधार पर अनुभूति लेखन में अधिक मदद करती है।

(3) 19. 'सूरदास जी का व्यक्तित्व व कृतित्व'

→ व्यक्तित्व

* नाम - सूरदास
* जन्म - सन 1478
* जन्म स्थान - • मथुरा के पास रुनकता या रेणुका क्षेत्र
  • दूसरी मान्यता के अनुसार दिल्ली के पास सीही नामक गाँव मे
* निवास - मथुरा और वृंदावन के बीच गऊघाट में
* वे श्रीनाथ जी के मंदिर में भजन-कीर्तन करते थे।
* वे भगवान श्री कृष्ण के अनन्य भक्त थे।
* उन्हे प्रेम व वात्सल्य का श्रेष्ठ कवि माना जाता है।
* वे अष्टछाप के कवियों में सर्वाधिक प्रसिद्ध है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

→ कृतित्व

* प्रमुख रचनाएँ - 1) सूरसागर
2) सूर सारावली
3) साहित्य लहरी

* उनका सूर सागर ग्रंथ सर्वाधिक प्रसिद्ध रहा।

* उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से सामान्य मनुष्यों को हीनता के बोध से मुक्त किया व उनमें जीने की ललक पैदा की।

* भाषा - ब्रजभाषा पर उनका विशेष अधिकार है।

निधन - सन् 1583, पारसौली में

HSER-181/2026

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

खण्ड - द

(4) 21. सेवा में,
श्रीमान प्रधानाचार्य महोदय,
राजकीय उ. मा. विद्यालय,
राजगढ़ ।
दिनांक - 19/02/26
विषय - शुल्क - मुक्ति चाहने हेतु ।
महोदय,
सविनय नम्र निवेदन इस प्रकार है कि मैं आपके विद्यालय के कक्षा- दसवीं 'ब' का छात्र हूँ। मेरे पिताजी दफ्तर में एक बाबू है। उनका मासिक वेतन मात्र 7000/- रुपये है। परिवार में हम चार भाई-बहन पढ़ने वाले है। इतनी कम आय में परिवार का गुजारा भी बड़ी कठिनाई से चलता है। ऐसी स्थिति में मैं मासिक कक्षा-शुल्क देने में असमर्थ हूँ।
अतः श्रीमान जी से अनुरोध है कि मेरा मासिक कक्षा शुल्क माफ करने का कष्ट करें ताकि मैं आगे की पढ़ाई जारी रख सकूँ।
इसके लिए मैं सदैव आपका आभार बना रहूँगा।
आपका आज्ञकारी शिष्य,
रितेश
कक्षा - दसवीं 'ब'
अनुक्रमांक - 05

द्वारा अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

संक्षिप्तीकरण

(1/2) 22

हृदय का अर्थ होता है - अपनी मातृभूमि व देश-प्रेम से युक्त। अपने देश से प्रेम तो हर कोई करता है, चाहे देश कैसा भी हो परंतु सच्चा देश भक्त वही होता है जो संकट के समय में अपने देश के लिए मर-मिटने को तैयार हो। केवल बातें करने से कोई देशभक्त नही बनता।

---

(6) 20 2)

'मेक इन इंडिया' - स्वदेशी जागरण का नया रूप

i) **प्रस्तावना** - आज हम विश्व के सभी विकसित राष्ट्र की ओर नजर डालें तो हमें उन सभी देशों में एक चीज समान रूप से दिखाई देती है जो से है उनका उत्पादन। विकसित देशों में अपनी आवश्यकता का सामान अपने ही देश में उत्पाद किए जाता है जिससे उनका खर्च आयात पर अधिक व्यय नही होता। साथ ही ये देश आयात को कम ही करते हैं, इसके विपरीत उनकी निर्यात की संख्या काफी मात्रा में अधिक रहती है। इसी आधार पर भारत में भी 'मेक इन इंडिया' प्रोग्राम चालू किया गया है। इसका उद्देश्य भारत में उत्पादन प्रबल करना है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

ii) मेक इन इंडिया और स्वदेशी जागरण का अर्थ
→ मेक इन इंडिया यह पहल हमारे देश के माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के द्वारा शुरू की गई थी। इसका उद्देश्य स्वदेशी जागरण को बढाना अर्थात भारत में ही रहे उत्पाद को बढाना। अधिक उत्पाद होने से हमारा देश भारत एक विकसित देश बन सकेगा। उत्पादन की क्षमता बढाने के लिए भारत की ओर बहुराष्ट्रीय कंपनियों का ध्यान आकर्षित करने की आवश्यकता है। इससे भारतीय माल पूरे विश्वभर में पहुँचेगा और भारत की आन-बान-शान में काफी वृद्धि होगी। भारत के लोगों को रोजगार मिलने की आशंका भी बनी रहेगी। इसके साथ ही हमारे देश में मशीनों की संख्या भी काफी तादाद में बढेगी।

iii) आम भारतीय नागरिक के कर्तव्य
→ इस योजना में भारतीय नागरिकों की काफी महत्वपूर्ण भूमिका रहेगी। लोगों को स्वयं का अपने देश के प्रति समर्पित होना होगा। उन्हें इस योजना में बढ चढकर भाग लेना होगा। साथ ही आम भारतीय नागरिकों को सरकार को भी प्रोत्साहित करना होगा जिससे भारतीय सरकार स्वदेशी को उत्पादन में अधिक-अधिक निवेश कर इसे और भी मजबूत बनाए।

BSER-181/2026

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

* आम नागरिकों के कुछ कर्तव्य :-
- विदेशी संसाधनों का प्रयोग न करें।
- अधिक से अधिक संख्या में भारतीय निर्मित वस्तुओं का प्रयोग करें।
- स्वयं को देश का जिम्मेदार नागरिक समझते हुए सरकार का साथ दें।
- अपने बच्चों व आने वाली पीढ़ी को इस योजना के सकारात्मक पहलुओं से अवगत कराएं।

(iv) राष्ट्र के विकास में स्वदेशी जागरण का योगदान

→ राष्ट्र के विकास में दो पहलू सबसे महत्वपूर्ण होते हैं:- आयात एवं निर्यात। जिस राष्ट्र ~~में~~ से जितना ज्यादा निर्यात होगा वह उस राष्ट्र के विकास में योगदान प्रदान करेगा। उस से वह राष्ट्र विकसित बनने की ओर अग्रसर रहेगा। इसके विपरीत जितना ज्यादा किसी देश में आयात होगा वह उस देश अथवा राष्ट्र की अवनति का कारण बनेगा। ऐसा इसलिए क्योंकि अधिक आयात होने पर सरकार को अधिक खर्च करना पड़ेगा जिससे अन्य क्षेत्रों में रुकावट आ जाएगी। अतः राष्ट्र के निर्माण में स्वदेशी जागरण अपनी एक ~~विशिष्ट~~ विशिष्ट भूमिका का निर्वहन करता है। राष्ट्र के विकास में इन सबसे अतिरिक्त और भी कई वस्तुएं होती हैं जैसे अन्य देशों के साथ संबंध, विदेशी ~~वि~~ नीतियाँ, सरकार की योजनाएं आदि।

BSER-181/2026

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(v) उपसंहार - हमें स्वयं का सरकार द्वारा चलाए गए 'मेक इन इंडिया' कार्यक्रम का भागीदार बनाते हुए अपनी जिम्मेदारियों का पूर्ण निर्वहन करना होगा। हमें इसका अधिक-से-अधिक प्रचार व प्रसार करना होगा। तब ही वह देश की प्रगति में सहायक बन सकेगा। राष्ट्र के विकास में स्वदेशी जागरण का योगदान अति महत्वपूर्ण है। सभी नागरिकों को मेक इन इंडिया और स्वदेशी जागरण का अर्थ समझना होगा।

समाप्त

BSER-181/2026

कुल योग = $79\frac{1}{2}$ = 80 अस्सी

02/03/2026

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-181/2026

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-181/2026